मुकम्मल नमाज़

पाकी

नमाज़

आदाब

सीरत

छैः बातें

मुफ़्ती मौ० राशिद बुलन्द शहरी

मरकज़ इशाअत इस्लामिया

फ़हरिस्तेअुनवानात

उनवान	सफ़्ह नं0

नमाज़

उनवान	सफ़ह नं०

आदाब

सीरत

• • • • •

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

पहला कलमा लॉ इला-ह इल लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ।

दूसरा कलमा अश हदु अल्लॉ इला ह इल्लल्लाहु व अश हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह ।

तीसरा कलमा सुब्हानल्लाहि वल हम्दुलिल्लाहि वलॉ इला-ह इललल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हव-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम ।

चौथा कलमा लॉ इला-ह इललल्लाहु

वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व-लहुल हम्दु युहयी वयुमीतु वहु-व हय्युल ला यमूतु अ-ब-दन अ-ब-दा जुल्जलालि वल-इकराम बियदिहिल ख़ैर वहु-व अ़ला कुल्लि शय इन क़दीर।

पाँचवां कलमा अस्तग़फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिनकुल्लि ज़न्बिन अज़नबतुहू अ़-म-दन अव-ख़-त-अन सिर्रन अवअ़लानि-य-तंव व अतूबु इलयहि मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी अअ़-ल-मु वमिनज़्ज़म्बिल्लज़ी ला अअ़लमु इन्न-क अन-त अ़ल्लामुल ग़ुयूबि व सत्तारुल अ़ुयूब व ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि वला हव-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अज़ीम।

छठा कलमा अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन अन उशरि-क बि-क शयअंव व-अ ने अअ़लमु बिही व अस तग़फ़िरु-क लिमा ला अअ़लमु बिही तुब्तु अ़नहु व-त-बर्रअ्तु मिनल कुफ़रि वश्शिर-कि वल-किज़्बि वल-ग़ीबति वल बिदअ़ति वन्नमी मति वल फ़वाहिशि वलबुह्तानि वल-मआ़सी कुल्लिहा वअस लम्तु व-अक़ूलु ला इला-ह इलल्लाहु मुहम्म दुर्रसूलुल्लाह।

ईमाने मुज मल आमन्तु बिल्लाहि कमाहु व बिअस्माँ इही वसिफ़ातिही व क़बिल्तु जमीअ अह्कामिही इक़रारुम बिल्लिसानि वतास्दीक़ुम्बिलक़ल्ब ।

ईमाने मुफ़स्सल *आमन्तु बिल्लाहि व मलाँ इकतिही व-कुतुबिही व-रुसुलिही वल-यौमिल आख़िरि वल क़दरि ख़यरिही वशर्रिही मिनल्लाहि तआला वल-बअसि बअ-दल मौत।*

वुज़ू के फ़राइज़ चार हैं

1. एक मर्तबा सारा चेहरा धोना। 2. एक बार दोनों हाथ कुहनियों समीत धोना। 3. एक बार चौथाई सर का मसह करना । 4. एक बार दोनो पाँव टखनों समीत धोना।

वुज़ू में तेरह सुन्नतें हैं

1. वुज़ू की नियत करना। 2. बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़कर वुज़ू करना। 3.पहले तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोना। 4. मिस्वाक करना, अगर मिस्वाक न हो तो उंगली से दाँतों को मलना। 5. तीन बार कुल्ली करना। 6. तीन बार नाक में पानी डालते हुए नाक को खूब साफ करना। 7. चेहरा धोते वक़्त डाढ़ी का खिलाल करना। 8. हाथ पैर धोते वक़्त उंगलियों का खिलाल करना। 9. हर हिस्से को तीन बार धोना। 10. एक बार तमाम सर का मसह करना। 11. दोनों कानों का मसा करना 12. तरतीव से वुज़ू करना। 13. लगातार धोना।

वुज़ू के मुस्तहिब्बात पाँच है

1. सीधी तरफ से शुरू करना। 2. गर्दन का मसह करना। 3. वुज़ू का काम खुद करना। 4. क़िबले की तरफ मुंह करके बैठना। 5. पाक और ऊंची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना।

वुज़ू के आदाब

1. कनकी उंगली भिगो कर कानों के सुराख़ों में दाख़िल करना। 2. नमाज़ के वक़्त से पहले ही वुज़ू कर लेना। 3. अअ़ज़ा को धोते वक्त हाथ से मलना। 4. ढीली अंगूठी को हिलाना। 5. दुनिया की बातें न करना। 6. 'जोर से पानी मुंह पर न मारना। 7. ज्यादा पानी न बहाना। 8. हर हिस्से को धोने के लिए बिस्मिल्लाह पढ़ना।

9. वुज़ू के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ना। 10. वुज़ू के बाद कलमा शहादत *अश हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश हदु अन न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह* पढ़ना। 11. वुज़ू का बचा हुआ पानी थोड़ा सा खड़े हो कर पीना। 12. वुज़ू के बाद दो रकअ़त तहिय्यतुल वुज़ू पढ़ना।

वुज़ू के मकरूहात

1. नापाक जगह पर वुज़ू करना। 2. सीधे हाथ से नाक साफ़ करना। 3. वुज़ू में दुनिया की बातें करना। 4. वुज़ू की सुन्नतों को छोड़ना। 5. पानी ज़रूरत से ज़्यादा खर्च करना। 6. बिला ज़रूरत पानी कम इस्तेमाल करना। 7. पानी चेहरे पर मारना। 8. तीन बार पानी लेकर तीन बार मसह करना।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें आठ हैं

1. पेशाब पाख़ाना करना या उन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना। 2. रीह यानी हवा का पीछे से निकलना। 3. बदन के किसी जगह से खून या पीप का निकलकर बहजाना। 4. मुंह भर के कै करना। 5. लेट कर या सहारा लगा कर सोना। 6. बीमारी या और किसी वजह से बेहोश हो जाना। 7. मजनू यानि दीवाना होजाना। 8. नमाज़ में खिल खिला कर हंसना।

गुस्ल के फराइज़ तीन हैं

1. कुल्ली करना। 2. नाक में पानी डालना। 3. तमाम बदन पर पानी बहाना।

गुस्ल की सुन्नतें पांच हैं

1. दोनों हाथ गट्टों तक धोना। 2. इस्तिन्जा करना और जिस जगह बदन पर निजासत लगी हो उसे धोना। 3. नापाकी दूर करने की नियत करना। 4. पहले वुज़ू कर लेना। 5. तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना।

गुस्ल के चार मकरूहात हैं

1. जरूरत से ज्यादा पानी बहाना। 2. नंगा होने की हालत में बात करना। 3. क़िबले की तरफ़ मुंह करना। 4. सुन्नतों के ख़िलाफ़ गुस्ल करना।

तयम्मुम में तीन फ़राइज़ हैं

1. पाकी हासिल करने की नियत करना।
2. दोनों हाथ पाक मिट्टी पर मार कर मुंह

पर फेरना। 3. दोबारा दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों पर कुहनियों समीत फेरना।

तयम्मुम की सात सुन्नतें हैं

1. शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना। 2. तरतीब से करना। 3. पै दर पै करना। 4. दोनों हाथ मिट्टी पर रख कर आगे की तरफ़ करना। 5. फिर पीछे को करना। 6. फिर हाथों को झाड़ना। 7. हाथ मिट्टी पर मारते वक्त उंगलियों को खुला रखना।

किन किन चीज़ों पर तयम्मुम किया जा सकता है

1. पाक मिट्टी पर। 2. रेत पर। 3. पत्थर पर। 4. चूने पर। 5. मिट्टी के कच्चे और

पक्के बर्तनों पर जिन पर रोगन न किया गया हो। 6. कच्ची या पक्की ईंट पर। 7. मिट्टी, ईंटों, पत्थरों या चूने की दीवार पर। 8. गेरू या मुल्तानी पर।

अज़ान

अल्लाहुअकबर 0 अल्लाहुअकबर 0
अल्लाहुअकबर 0 अल्लाहुअकबर 0
अशहदु अल्लाँ इला ह इल्लल्लाह 0
अशहदु अल्लाँ इला ह इल्लल्लाह 0
अशहदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह 0
अशहदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह 0
हइ-य अलस्सलाह 0 हय्य अलस्सलाह
0 हय्य अलल फ़लाह 0 हय्य अलल

फ़लाह़ 0 अल्लाहुअकबर 0 अल्लाहुअकबर 0 लाँ इला ह इललल्लाह़

फ़ज्र की अज़ान में *हइ-य अ़लल फ़लाह़* के बाद *अस्स़लातु ख़ैरुम्मिनन्नौम 0 अस्स़लातु ख़ैरुम्मिनन्नौम 0* का इज़ाफ़ा करें फिर अज़ान के बाक़ी जुमले अदा करें और नमाज़ के लिए जब खड़े हों तो तक्बीरे इक़ामत में अज़ान के अलफ़ाज़ में हइ-य अ़लल फ़लाह के बाद *क़द क़ा मतिस्स़लाह़0 क़द क़ा मतिस्स़लाह़0* का इज़ाफ़ा करके अज़ान के बाक़ी जुमले अदा करें।

अज़ान के बाद की दुआ़

अल्लाहुम्म र रब्ब हाज़िहिद दअ़वति त्ताँम्मति वस्स़लातिल क़ाँइमति आति

मुहम्मद निल वसी लत वल फ़ज़ी लत वब अ़सहु मक़ामम महमू-द निल्लज़ी वअ़त्तहु इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द।

सना

सुब्हा न कल्ला हुम्म व बिहम्दि क व तबा र कस्मु क व तआ़ला जद्दु क वला इला ह ग़ैरुक

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

तअव्वुज़

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम 0

तस्मिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

सूरतुल फ़ातिहा

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन 0
अर्रहमानिर्रहीम 0 मालिकि यौमिद्दीन 0
इय्या -क नअ़-बुदु वइय्या -क नस्त-त-ईन 0
इहदिनस्सिरातल मुस तक़ीम 0 सिरातल्लज़ी न
अन अ़म त अ़लैहिम 0 ग़ैइ रिल मग़ज़ूबि
अ़ लयहिम वलज़्ज़ा ल्लीन 0 (आमीन)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

सूरतुल अस्र

वल अ़स्रि 0 इन्नल इन्सा -न लफ़ी ख़ुस्र 0 इल लल्लज़ी -न आ मनू
व अ़मिलुस्सालिहाति व-त-वा-सउ बिलहक़्क़ि 0 व-त-वा सउ बिस्सब्र 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

सूरतुल फ़ील

अलम -त -र कइ-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बिअस्हाबिल फ़ील 0 अलम यजअ़ल कइ-दहुम फ़ी तज़लील 0 व अर-स -ल अ़लयहिम तय रन अबाबील 0 तरमीहिम

बिहि जा रतिम-मिन-सिज्जील 0

फ-ज-अ लहुम क-अस्फ़म मअ-कूल 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوْا

رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

सूरतुल कुरैश

लिईलाफ़ि कु रयशिन 0 ईलाफ़िहिम

रिह लतश्शिता इ वस्सइफ़ 0 फ़ल यअबुदू

रब-ब हाजल बइत 0 अल्लज़ी

अत -अ. -म हु म मिन जू अ़ 0

व आ-म-न-हुम मिन ख़ौफ़ 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝ وَ

لَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ
صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝

सूरतुल माऊ़न

अ-र-अय्तल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन 0
फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ़्अुल यतीम 0 वला
यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल मिस्कीन 0 फ़ वइ
लुल-लिल मुसल्लीन 0 अल्लज़ी-न हुम
अ़न स़लातिहिम साहून 0 अल्लज़ी न हुम
युरा ऊन 0 व यम न ऊ़नल माऊ़न 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

सूरतुल कव सर

इन्ना अंअ़ तयना कल कउस़र 0

फ़सल्लि लि-रब्बि-क वन हर 0 इन-न
शानि-अ -क हु वल अबतर 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَ

لَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

सू रतुल. काफ़िरून

कुल यां अय्युहल काफ़िरून 0 लां
अअ़बुदु मा-तअ़बुदून 0 वलां अन्तुम
आ़बिदू-न मां अअ़बुद 0 वलां अ-न
आबिदुम-माअ़बत्तुम 0 वलां अन्तुम
आबिदून मा अअ़बुद 0 लकुम दीनुकुम
वलि-य दीन 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ① وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ

اللّٰهِ اَفْوَاجًا ② فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ③

सूरतुन्नस्र

इज़ा जा अ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह 0
व -र-अयतन्ना -स यदखुलू न
फ़ी-दीनिल्लाहि अफ़्वाजा 0 फ़-सब्बिह
बिहम्दि रब्बि -क वस तग़फ़िर्ह-इ-न हू
का -न तव्वाबा 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ① مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

كَسَبَ ② سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ③ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

الْحَطَبِ ④ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ⑤

सूरतुल-लहब

तब्बत यदा अबी लहबिंव व-तब्ब 0
मा अग़ना अन्हु मालुहू वमा कसब 0
सयस्ला नारन-ज़ा-त लहब 0
वम-रअतुहू हम्मा ल-तल ह-तब 0
फी जीदिहा हब्लुम मिम मसद 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۟

सूरतुल इख़्लास

क़ुल हुवल्लाहु अहद 0 अल्लाहुस्समद 0 लम यलिद 0 व लम यूलद 0 व लम य कुल्लहू कुफ़ुवन अहद 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

सूरतुल फ़लक़

कुल अऊज़ू बिरब्बिल फ़लक़ 0 मिन शर्रिमा ख़लक़ 0 व-मिन शर्रि ग़ासिकिन इज़ा वक़ब 0 वमिन शर्रिन्नफ्फ़ासाति फ़िल उक़द 0 वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ

صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○

सूरतुन्नास

कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास 0 मलिकिन्नास 0 इलाहिन्नास 0 मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास 0 अल्लज़ी युवसविसु फ़ी सुदूरिन्नास 0 मिनल जिन्नति वन्नास 0

तशह्हुद

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस-स-ल-वातु वत्तय्यिबात - अस्सलामु अ़लयक अय्युहन नबिय्यु व रह् मतुल्लाहि व ब र कातुह- अस्स लामु अ़लयना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन 0 अश हदु अल्ला इला-ह . इल लल्लाहु व अश हदु अन-न मुहम्म दन अ़ब्दुहू व रसूलुह 0

दरूद शरीफ़

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला

मुहम्मदिंव व-अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लयत अ़ला इबराहीम व अ़ला आलि इबराही-म इन्नक हमीदुम्मजीद - अल्लाहुम्मबारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अ़ला इबराही-म व अ़ला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम्मजीद -

दरूद शरीफ़ के बाद की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लमतु नफ़सी जुलमन कसीरों वला यग़फ़िरूज्जुनू-ब इल्ला अनत फ़ग़फ़िरली मग़ फ़िरतम मिन इन्दिक वर हम्नी इन्नक अन्तल ग़फूरुर्रहीम।

दुआ-ए-कुनूत

अल्लाहुम्म इन्ना नस्तईनु क वनस्तग़फ़िरु क

व नुअमिनु बि क व न तवक्कलु अ़लय क
वनुस्नी अ़लयकल ख़ैर । व
नश्कुरु क वला नकफ़ुरु क वनख़्लअु
व नतरुकु मंय्यफ़जुरुक -अल्लाहुम्म
इय्या क नअ़बुदु व ल क नुसल्ली
वनस्जुदु व इ लयक नस्आ व नहफ़िदु
व नरजू रह मतक व नख़्शा अ़ज़ा बक
इन्न अ़ज़ा ब क बिलकुफ़्फ़ारि मुल्हिक़।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ
بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

आयतुल कुर्सी

अल्लाहु ला इला ह इल्लाहु वल हय्युल क़य्यूम ० ला तअ ख़ुज़ुहू सि न तुंव्वला नौम - लहू माफ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़ - मनज़ल्लज़ी यश फ़उ इन्दहू इल्लाबिइज़्निह-यअ लमु मा बय न अयदीहिम वमाख़ल फ़ हुम वलायुहीतू न बि शय इम्मिन इल्मिही इल्ला बिमाशा अ वसिअ कुर्सियुहुस्समावाति वल अर्ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहु वल अल्युल अज़ीम ०

तरावीह की दुआ

सुब्हा न ज़िलमुल्कि वल म लकूति सुब्हा न ज़िल्इज़्ज़ति वल अज़ मति वल हय बति वलकुद रति वलकिब्रियाँ इ वल ज ब रुत-सुबहानल मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु वला यमूतु सुब्बूहुन

कुद्दूसुन रब्बुना वरब्बुल मलाइकति वर्रूह अल्लाहुम्म अजिरना मिनन्नार या मुजीरू, या मुजीरू, या मुजीर 0

नमाज़ के बाहर के फ़राइज़ सात हैं

1. बदन का पाक होना 2. कपड़ों का पाक होना 3. जगह का पाक होना 4. सतर का छुपाना 5. नमाज़ का वक्त होना 6. क़िबले की तरफ़ रुख़ करना 7. नियत करना

नमाज़ के अन्दर के फ़राइज़ छः हैं

1. तकबीर तहरीमा कहना 2. खड़ा होना 3. कुरआन मजीद पढ़ना 4. रुकू करना 5. दोनों सजदे करना 6. नमाज़ के आख़िर में अत्तहिय्यात पढ़ने की मिक़दार बैठना ।

(कुछ उलमा के नज़दीक नमाज़ी को अपने फ़अ़ले इख़्तियारी से नमाज़ ख़त्म करना भी फ़र्ज़ है)

नमाज़ के वाजिबात चौदह हैं

1. सूरेफ़ातिहा का पढ़ना (यानि फ़र्ज नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअत के अलावा तमाम नमाज़ों की हर रकअत में सूरेफातिह का पढ़ना)
2. सूरत का मिलाना (यानि फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकअतों में और वाजिब सुन्नत नफ़िल नमाज़ों की हर रकअत में सूरे फातिहा के बाद कोई सूरत या बड़ी एक आयत या छोटी तीन आयत पढ़ना।)
3. फ़र्ज़ की पहली दो रकअतों को क़िरात के लिए मुतअय्यन करना
4. सूरेफ़ातिहा को सूरत से पहले पढ़ना
5. अरकान को तरतीब से अदा करना
6. क़ौमा करना (यानि रुकू से उठकर सीधे

खड़ा होना)

7. जलसा करना (यानि दोनो सजदों के दरमियान सीधे बैठना)
8. पहला क़अ़दा करना।(यानि तीन और चार रकअत वाली नमाज़ों में दो रकतों के बाद तशहहुद की मिक़दार बैठना)
9. दोनों कादों मे तशहहुद पढ़ना
10. तादीले अरकान यानी रुकू सजदा वग़ैरा को इत्मिनान से अच्छी तरह अदा करना
11. लफ़्ज़े सलाम से नमाज़ खत्म करना
12. वित्र में दुआ़-ए कुनूत के लिए तकबीर कहना और दुआ़-ए कुनूत पढ़ना
13. ईदैन में ज़ाइद छः तकबीरें कहना
14. इमाम को फ़ज्र, मग़रिब, इशा, जुमा, ईदैन, तरावीह और रमज़ान के वित्रों में ज़ोर से किरत करना और जुहर अ़सर में आहिस्ता पढ़ना

नमाज़ की इक्यावन सुन्नतें

क़याम की ग्यारह सुन्नतें

1. तकबीरे तहरीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना यानि सर को न झुकाना
2. दोनों पैरों के दरमियान चार उंगली का फ़ासिला रखना और पैरों की उंगलियां किबले की तरफ रखना।
3. मुक़्तदी की तकबीरे तहरीमा इमाम की तक़बीरे तहरीमा के साथ होना
4. तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना
5. हथेलियों को क़िबले की तरफ रखना
6. उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज्यादा खुली हुई और न ज्यादा बंद रखना

7. सीधे हाथ की हथेली उल्टे हाथ की पुश्त पर रखना
8. छंगली और अंगूठे से हल्क़ा बनाकर गट्टे को पकड़ना
9. दरमियानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना
10. नाफ़ के नीचे हाथ बांधना
11. स ना पढ़ना

क़िरात की सात सुन्नतें

1. अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना
2. बिस्मिल्लाह पढ़ना
3. आहिस्ता से आमीन कहना
4. फ़ज्र और जुहर में तिवाले मुफ़स्सल यानी सूर-ए-हुजुरात से सूर-ए-बुरुज तक अस़र और इशा में अवसाते मुफ़स्सल

यानी सूर-ए-बुरूज से सूर-ए-लम यकुन तक और मग़रिब में क़िसारे मुफ़स्सल यानी सूर-ए-इज़ाज़ुल ज़िलत से सूर-ए-नास तक पढ़ना

5. फ़ज्र की पहली रकात को लम्बी करना
6. न ज्यादा जल्दी पढ़ना न ज्यादा ठहर ठहर कर बल्कि दरमियानी रफ्तार से पढ़ना
7. फ़र्ज की तीसरी और चौथी रकात में सिर्फ सूरे फ़ातिहा पढ़ना

रुकू की आठ सुन्नतें

1. रुकू की तकबीर कहना
2. रुकू में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना
3. घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना

4. पिन्डलियों को सीधा रखना
5. कमर को बिछा देना
6. सर और सुरीन को बराबर रखना
7. रुकू में कम से कम तीन बार *सुबहा न रब्बियलअज़ीम* कहना।
8. रुकू से उठने में इमाम को *समिअल्ला हुलिमन हमिदह* और मुकतदियों को रब्बना लकलहम्द और अकेले को दोनों कहना

सजदे की बारह सुन्नतें

1. सजदे की तकबीर कहना
2. सजदे में पहले दोनो घुटनों को रखना
3. फिर दोनो हाथों को रखना
4. फिर नाक रखना
5. फिर पेशानी रखना

6. दोनो हाथों के दरमियान सजदा करना
7. सजदे में पेट को रानो से अलग रखना
8. पहलुओं को बाजुओं से अलग रखना
9. कुहनियों को जमीन से अलग रखना
10. सजदे में कम से कम तीन बार *सुब्हा न रब्बियल अअ़्ला* कहना
11. सजदे से उठने की तकबीर कहना
12. सजदे से उठते हुए पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ फिर घुटनों को उठाना और दोनों सजदों के दरमियान इतमिनान से बैठना

क़ादे की तेरह सुन्नतें

1. सीधे पैर को खड़ा रखना और उल्टे पैर को बिछा कर उस पर बैठना और पैर की उंगलियों को क़िबले की तरफ रखना

2. दोनो हाथों को रानो पर रखना
3. तशह्हुद में अल्लाइला ह पर शहादत की उंगली उठाना और इललल्लाह पर झुका देना
4. क़ाद एं आखिरा में दरूद शरीफ पढ़ना
5. दरूद शरीफ के बाद दुआ ए मासूरा उन अलफाज़ में जो कुरआन और हदीस् के मुशाबह हों पढ़ना
6. दोनों तरफ सलाम फेरना
7. इमाम सलाम करने की नियत करे मुक़तदियों कों फ़रिशतों को और नेक जिन्नातों को
8. सलाम सीधी तरफ पहले फेरना
9. मुक़तदी सलाम करे इमाम को, फ़िरिश्तों को, नेक जिन्नातों को और दाएं बाएं मुक़तदियों को

10. मुनफरिद (वह शख़्स जो अकेले नमाज़ पढ़े) को सिर्फ फ़रिश्तों की नियत करना
11. मुक्तदी को इमाम के साथ सलाम फेरना
12. दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम की आवाज़ से हल्की करना
13. मसबूक़ (वो शख़्स जिसकी इमाम के साथ से कुछ रकत शुरू में छूट गई हों) को इमाम के फ़ारिग़ होने का इन्तज़ार करना

औरतों की नमाज़ में फर्क़

1. तक्बीरे तहरीमा के वक्त अपने दोनों हाथ कन्धे तक उठाएं लेकिन हाथों को दुपट्टे से बाहर न निकालें

2. सीने पर हाथ बांधें और सीधे हाथ की हथेली को उलटे हाथ पर सिर्फ रखें

3. रूकु में इतना झुकें कि सिर्फ दोनों हाथ घुटनों तक पहुंच जायें और उंगलियों को मिलाकर रखें। दोनों बाजुओं को पहलुओं से मिलाए रखें और दोनों पैरों के टखनों को बिल्कुल मिला कर रखें

4. सजदे में ओरतें पांव न खड़े करें बल्के सीधी तरफ को निकाल दें और खूब सिमट कर दब कर सजदा करें के पेट दोनों रानो से और बाहें दोनों पहलुओं से मिली रहे और दोनों बाहों को ज़मीन पर रख दें

5. क़ादे में जब बैठें, दोनों पांव सीधी तरफ निकाल ले और दोनों हाथों को रान पर रख लें और उंगलियां खूब मिला कर रखें

मुस्तहिब्बाते नमाज़ पाँच हैं

1. तकबीरे तहरीमा के वक़्त आस्तीनों से दोनों हथेलियां निकाल लेना
2. रुकू और सुजूद में मुनफ़रिद (अकेले नमाज पढ़ने वाला) का तीन मर्तबा से ज़ायद तस्बीह पढ़ना
3. खड़े होने की हालत में सजदे की जगह पर और रुकू में क़दमों के दरमियान जल्से और क़अ़्दे में अपनी गोद पर और सलाम के वक़्त अपने कन्धों पर नज़र रखना
4. खाँसी को अपनी ताक़त भर न आने देना
5. जमाइ में मुंह बंद रखना

नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें

1. नमाज़ में बात करना जान कर हो या

भूल कर थोडी हो या ज़्यादा

2. किसी को सलाम करना
3. सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को *यर हमुकल्लाह* कहना या नमाज़ से बाहर वाले किसी शख़्स की दुआ पर आमीन कहना
4. किसी बुरी ख़बर पर *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊन* पढ़ना या किसी अछी ख़बर पर *अल्हमदुलिल्लाह* कहना या किसी अजीब ख़बर पर *सुब्हानल्लाह* कहना
5. अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़मा देना
6. दर्द या रन्ज की वजह से आह या उफ़ कहना
7. कुरआन शरीफ़ देख कर पढ़ना

8. कुरआन शरीफ़ पढ़ने में कोई सख़्त ग़ल्ती करना
9. अमले कसीर करना यानी कोई ऐसा काम करना जिस से देखने वाले यह समझें कि यह शख़्स नमाज़ नही पढ़ रहा है
10. कोई चीज़ खाना या पीना जान कर या भूल कर
11. दो सफ़ों की मिक़्दार के बराबर चलना
12. क़िबले की तरफ़ से बिला उज़्र सीना फेरलेना
13. नापाक जगह पर सजदा करना
14. सतर खुल जाने की हालत में एक रुकुन की मिक़दार ठहरना
15. दुआ में ऐसी चीज मांगना जो इंसानों से मांगी जाती है

16. दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना के आवाज़ में कोई हर्फ़ ज़ाहिर होजाए

17. बालिग़ आदमी का नमाज़ में क़ह क़हा मार कर या आवाज़ से हंसना

18. इमाम से आगे बढ़ जाना वग़ैरह।

मकरूहाते नमाज़

1. सदल यानी कपड़े को लटकाना।
2. कपड़ों को मिट्टी वग़ैरा से बचाने के लिए हाथ से रोकना या समेटना
3. अपने कपड़ों या बदन से खेलना
4. मामूली कपड़ों में नमाज़ पढ़ना जिन को पहन कर मजमें में जाना पसन्द नहीं किया जाता
5. मुंह में रूपया या पैसा या कोई और ऐसी चीज़ रख कर नमाज़ पढ़ना जिस

की वजह से कि़रत करने से मजबूर ना हों और अगर कि़रत से मजबूर हो जाए तो नमाज़ न होगी

6. सुस्ती और बे परवाही की वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ना
7. पाखा़ना पेशाब की हा़जत होने की हालत में नमाज़ पढ़ना
8. बालों को सर पे जमा कर के जुट्टा बांधना
9. कंकरियों को हटाना लेकिन अगर सजदा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में कोई मुजा़यका नही
10. उंगलियां चटखा़ना या एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना
11. कमर या कोख या कूल्हे पर हाथ रखना

12. क़िब्ले की तरफ़ से मुंह फेरकर या तरफ़े निगाह से इधर उधर देखना
13. कुत्ते की तरह बैठना (यानी रानें खड़ी करके बैठना और रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन पर रख लेना)
14. मर्द का सजदे में दोनों कलाइयों को ज़मीन पर बिछालेना
15. ऐसे आदमी की तरफ़ नमाज़ पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ़ मुंह करके बैठा हो
16. हाथ के इशारे से सलाम का जवाब देना
17. बिला उज़्रचहार ज़ानू (आल्ती पाल्ती मार कर) बैठना
18. बिला वजह जमाई लेना या रोक सकने के बावजूद न रोकना

19. ऑखों को बन्द करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगने की वजह से बंद करें तो मकरूह नही
20. इमाम का महराब के अन्दर खड़ा होना लेकिन अगर क़दम महेराब के अंदर नही तो मकरूह नही
21. अकेले इमाम साहब का एक हाथ ऊंची जगह पर खड़ा होना और अगर उसके साथ कुछ मुक़तदी भी हों तो मकरूह नहीं
22. ऐसी स़फ़ के पीछे अकेले खड़ा होना जिस में जगह खा़ली हो
23. किसी जानदार की तस्वीर वाले कपड़े को पहन कर नमाज़ पढ़ना
24. ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि नमाज़ी के सर के ऊपर या उस के सामने या सीधी

उल्टी जानिब या सजदे की जगह तस्वीर हो

25. आयतें या सूरतें या तस्बीहें उंगलियों पर शुमार करना

26. चादर या और कोई कपड़ा इस तरह लपेट कर नमाज़ पढ़ना कि जल्दी हाथ बाहर न निकल सके

27. नमाज़ में अंगड़ाई लेना यानी सुस्ती उतारना

28. सुन्नत के खिलाफ़ नमाज़ में कोई काम करना

फ़राइज़े नमाज़े जनाज़ा दो हैं

1. चार तकबीर यानी चार मर्तबा अल्लाहुअकबर कहना

2. क़याम यानी खड़े होकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

सुन्नतें नमाज़े जनाज़ा चार है

1. इमाम का मैयत के सीने के सामने खड़ा होना 2. पहली तकबीर के बाद सना पढ़ना 3. दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ना 4. तीसरी तकबीर के बाद मय्यित के लिए दुआ पढ़ना ।

नियत नमाज़े जनाज़ा

नियत करता हूं नमाज़े जनाज़ा की चार तकबीरों के साथ, तारीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिए, दरूद शरीफ़ हज़रत रसूलुल्लाह (स0) के लिए, दुआ इस मय्यित के लिए इस इमाम के पीछे (या मैं इमाम मुक्तदियों का) मुंह मेरा क़िब्ले की तरफ़

पहली तकबीर – *अल्लाहु अकबर*

सना

सुब्हा-न कल्लाहुम-म वबिह़म्दि-क व तबा-र कस्मु-क व-तआ़ला जद्दु-क व-जल्ल सना' अुक वला' इला-ह ग़यरुक

दूसरी तकबीर – अल्लाहु अकबर

दरूद शरीफ

अल्ला हुम-म स़ल्ली अ़ला मुह़म्मदिंव व-अ़ला आलि मुह़म्मदिन कमा स़ल्लय-त व-स़ल्लमत व-बारक-त व-रह़िम-त व-त-रह़ ह़म-त अ़ला इबराही-म व-अ़ला आलि इबराही-म इन-न-क ह़मीदुम्मजीद

तीसरी तकबीर– अल्लाहु अकबर

बालिग़ मर्द और औ़रत की मय्यित की दुआ़

अल्लाहुम्मग़फ़िरलि ह़य्यिना वमय्यितिना वशाहिदिना वग़ा' इबिना वसग़ीरिना

व-कबीरिना व-ज़करिना वउन्सा़ना अल्लाहुम-म मन अहयइ-तहू मिन्ना फ़-अहयिही अ़लल इस्लाम व-मन तवफ़्फ़यतहू मिन्ना फ़त वफ़्फ़हू अ़ललईमान।

नाबालिग़ लड़के की मय्यित की दुआ़

अल्लाहुम्मज अ़ल्हु लना फ़रतंव्वज अ़ल्हु लना अज रंव्वजुख़्रंव वज अ़ल्हु लना शाफ़िअ़ंव्वमुशफ़्फ़आ़

नाबालिग़ा लड़की की मय्यित की दुआ़

अल्लाहुम्मज अ़ल्हा लना फ़-र-तंव वजअल्हा लना अज रंव्वजुख़्रंव वजअ़ल्हा लना शाफ़िअ़तंउ व-मुशफ़्फ़अ़ह।

चौथी तकबीर- अल्लाहु अकबर०

दाएं और बाएं कहे----

अस्सलामु अ़लैकुम व रह मतुल्लाह

मुसाफ़िर की नमाज़

अगर कोई शख्स कहीं से कम से कम सत्रा सतत्तर किलों मीटर (77.25 Km.) का इरादा करके चले और जहां उसको जाना है वहां पन्द्रह दिन से कम ठहरने की नियत करे तो वह शख्स मुसाफिर है और चार रकत वाली नमाज़ को दो रकत पढ़ेगा।

खाने के आदाब

1. दस्तरख़्वान विछाना 2. दोनों हाथ गट्टों तक धोना 3. बिस्मिल्लाह पढ़ना 4. सीधे हाथ से खाना 5. खाना एक किस्म का हो

तो अपने सामने से खाना 6. अगर कोई लुक्मा गिर जाए तो उठाकर साफ़ करके खाना 7. टेक लगा कर न खाना 8. खाने में कोई ऐब न निकालना 9. खाते वक्त उकडू बैठना या एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछाकर उस पर बैठना या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछा कर क़ादे की तरह बैठे और आगे की तरफ़ ज़रा झुक कर बैठे 10. खाने के बाद बर्तन और उंगलियों को साफ़ कर लेना 11. तीन उंगलियों से खाना 12. मस्जिद में बैठ कर प्याज न खाएं और अगर बाहर भी खाएं तो बदबू जाने तक मस्जिद में दाखिल न हों 13. अगर शुरू में *बिस्मिल्ला* पढ़नी भूल जाएं तो *बिस्मिल्लाहि अव्व लहू व आख़िरहू* 0

पढ़ना 14. खाने के बाद की दुआ पढ़ना-

अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी अत् अ् मना व सकाना व जअ् लना मिनल मुस्लिमीन

दूसरी दुआ : *अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी हुव अश बअ़ना व अरवानां व अन अ़म अ़लयना व अफ़ज़ल* 15. जब किसी दूसरे के घर खाना खाए तो यह दुआ पढ़े- *अल्लाहुम्म अत इम मन अत् अ़मनी वसक़ि मन सक़ानी* 16. द स्त र ख़्वान उठाने की दुआ - *अल्हमदु लिल्लाहि हमदन कसीरन तय्यिबन मुबा र कन फ़ीहि* पढ़ना। 17. जब मेज़बान के घर से चलें तो यह दुआ पढ़ें - *अल्लाहुम्म बारिक लहुम फ़ीमा र ज़क़ तहुम वग़फिर लहुम वर हम हुम।*

पीने के आदाब

1. सीधे हाथ से पीना 2. बैठ कर पीना 3. बिस्मिल्लाह कहकर पीना और पीकर *अल्हम्दुलिल्लाह* कहना 4. तीन सांस में पीना 5. बर्तन के टूटे हुए किनारे की तरफ़ से न पीना 6. दूध पीने के बाद यह दुआ पढ़ना *अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि वज़िदना मिनहु* 7. ज़म् ज़म् का पानी खड़े होकर पीना 8. वुज़ू से बचा हुआ पानी खड़े हो कर पीना

सोने के आदाब

1. इशा की नमाज़ पढ़ कर जल्दी सोने की कोशिश करना 2. बा वुज़ू सोना 3. तीन मर्तबा बिस्तर झाड़ लेना 4. सुरमा लगाकर सोना 5. सोने से पहले तस्बीह फ़ातिमा

पढ़लेना 33 मर्तबा *सुब्हानल्लाह* 33 मर्तबा *अल्हम्दुलिल्लाह* और 34 मर्तबा *अल्लाहु अकबर* पढ़ना 6. अल्हम्दुशरीफ़ पढ़ना, चारों कुल पढ़ना, आयतुलकुर्सी पढ़ना, सूरे मुल्क और अलिफ़ लाम मीम सजदा पढ़ना। अगर ज़्यादा न पढ़ सकें तो कम से कम कुरआन शरीफ़ की दस आयत ही पढ़लें 7. सोने से पहले तीन बार इस्तिग़फ़ार भी पढ़ना *अस तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी लॉ इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम* 8. सोने की दुआ पढ़ना *अल्लाहुम्म बिस्मि क अमूतु व अहया* 9. सीधी करवट लेटकर सीधा हाथ सीधे गाल के नीचे रखकर क़िबले कि तरफ़ मुंह करके सोना। 10. अगर डरावना ख़्वाब नज़र आए और आंख खुल जाए तो – *अऊ़ज़ु बिल्लाहि*

मिनश्शैतानिर्रजीम तीन बार पढ़कर उल्टी तरफ़ थुथकार दो और करवट बदल कर सोजाओ 11. सोकर उठे तो यह दुआ़ पढ़े- *अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ़ द मा अमा तना व इलय हिन्नुशूर*

सफ़र के आदाब

1. जब सफ़र का इरादा करे तो यह दुआ़ पढ़े- *अल्लाहुम्म बिक असूलु व बिक अहूलु व बिक असीर।* 2. दरवाजे से बाहर निकल कर यह दुआ़ पढ़े- *बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अ़लल्लाहि व ला हवल व लाकुव्वत इल्ला बिल्लाह* 3. जहां तक हो सके सफ़र में कम से कम दो आदमी जाएं अल्बत्ता मजबूरी में कोई हर्ज नही 4. सवार होने के लिए जब

सवारी पर क़दम रखे तो *बिस्मिल्लाह* कहे
5. सवारी पर जब अच्छी तरह बैठ जाए तो तीन बार *अल्लाहुअकबर* कहे फिर यह दुआ पढ़े

सुबहानल्लजी सख्ख़र लना हाज़ा वमा कुन-न लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़लिबून

6. जब बुलन्दी पर चढ़े तो *अल्लाहुअकबर* कहे 7. जब नीचे उतरे तो *सुब्हानल्लाह* कहे
8. जिस शहर या गांव में जाने का इरादा हो तो उस को देख कर तीन बार यह दुआ पढ़े *अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहा*
9. जब इस शहर में दाखि़ल होने लगें तो यह दुआ पढ़ें *अल्लाहुम्मर्जुक़ना जनाहा व हब्बिबना इला अहलिहा व हब्बिब साल्हिी अह लिहा इलयना*

10. सफ़र से वापसी पर बग़ैर इत्तिला के घर में दाख़िल न हों पहले ख़बर करादी जाए 11. सफ़र से वापसी पर घर में दाख़िल होने से पहले मस्जिद में दो रकात नमाज़ पढ़ें 12. सफ़र से वापस आएं तो यह दुआ़ पढ़ें *आ-इबू-न ता-इबू-न आ़बिदू-न लिरब्बिना हा़मिदून।*

कुरआन मजीद पढ़ने के फज़ाइल

1. क़यामत के दिन पढ़ने वाले की सिफारिश करेगा। 2. हर हर्फ़ पर दस नेकियां मिलेंगी 3. साहिबे कुरआन से कहा जाएगा कि कुरआन मजीद पढ़ते जाओ और जन्नत में बुलन्द दरजात की तरफ़ बढ़ते जाओ क्यों कि उसकी मन्ज़िल वहां तक है जहां तक वह आख़िरी आयत की तिलावत

करेगा। 4. दिल का ज़ंग दूर करेगा। 5. कुरआन शरीफ़ पढ़ने से अल्लाह की मुहब्बत में ज़्यादती होती है। 6. अल्लाह से नज़दीकी पैदा होती है।

आदाबे तिलावते कुरआन पाक

1. पाक साफ़ होना 2. बा वुज़ू होना 3. अदब के साथ बैठना 4. कुरआन शरीफ़ को रेहल या साफ़ तकिए पर रखना 5. उस की तरफ़ पांव न करना 6. उस से ऊंची जगह न बैठना 7. तअ़व्वुज़ और तस्मियह से शुरू करना 8. कुरआन मजीद पढ़ने के दरमियान बातें न करना 9. अगर बातें करें तो फिर से तअ़व्वुज़ पढ़ कर शुरू करना 10. क़वाइद के मुताबिक़ ठहर ठहर कर पढ़ना और अच्छी आवाज़ से पढ़ना

हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लयहि व सल्लम एक नज़र में

हुज़ूरे पाक स० नौ[9] रबीउल अव्वल बरोज़ पीर मुताबिक़ बीस[20] अप्रैल 571ई० को मक्का मुअ़ज़्ज़मा में पैदा हुए, आप (स०) के वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह वाल्दा का नाम आमिना था। दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब, दादी का नाम फ़ातिमा, नाना का नाम वहब, नानी का बर्रह था। आप के बारह[12] चाचा और छः[6] फूफियां थीं। आप के वालिद आप की पैदाइश से दो[2] महीने पहले वफ़ात पाचुके थे। आप की छः[6] साल की उम्र हुई तो वाल्दा का भी इन्तक़ाल

होगया और फिर परवरिश दादा अब्दुल मुत्तलिब के सुपुर्द हुई। जब उम्र बारह[12] साल की हुई तो आप के चचा अपने साथ तिजारत के लिए मुल्के-शाम की तरफ़ ले गये, रास्ते में बुहैरा राहिब ने पहचान कर यह नबी आख़िरुज़्ज़मां है वापस करा दिया पच्चीस[25] साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से उनकी तिजारत के वकील होकर फिर शाम तशरीफ़ ले गये। वहां फ़िर नसतूरा राहिब से मुलाक़ात हुई उसने आपके नबी होने की बशारत दी।

इकतालिसवीं[41] बरस नौ[9] रबीउल् अव्वल मुताबिक़ बारह[12] फरवरी 610 ई0 बरोज़ पीर को कोहे हिरा में आप को नुबुव्वत मिली और आपने खुदा के हुक्म पर पोशीदा तौर पर मुसलमान बनाना शुरू

किया। जो हज़रात मुसलमान होते रहे उन्होंने अपना फ़र्ज़ महसूस किया और फ़ौरन दूसरों में तबलीग़ शुरू करदी। तीन साल के अर्से में तक़रीबन तीस आदमी मुसलमान हुए। उसके बाद आपने खुल्लम खुल्ला तबलीग़ शुरू करदी। जिस की बिना पर मुशिरकों ने मुसलमानों पर ज़ुल्म शुरू कर दिया। परेशानियों के बढ़ने की वजह से पन्द्रह[15] मुसलमानों ने सन 5 नबवी को मक्का छोड़ कर हब्शा क़याम फ़रमाया (यह पहली हिजरते-ह्-बशा कहलाती है।)

7 नबवी में ग़ैर मुस्लिमों ने मुसलमानों को बिल्कुल खत्म करने के इरादे से आप स० को और आप स० के हिमायतियों (साथियों) को शिअबे अबी तालिब में डाल कर गोया क़ैद कर दिया

जहां तीन[3] साल तक रहे। इसी दौरान 7 नबवी को सौ से कुछ ज़्यादा मुसलमानों ने हब्शा की दूसरी हिजरत की और सन 10 नबवी को हज़रत ज़ैद इब्ने हारिस् के साथ ताइफ़ का सफ़र किया और मअ़राज का वाक़ा भी पेश आया जिसमें पांच[5] नमाज़ें फर्ज़ हुई और इसी दस[10] नबवी को मदीना के दो[2] अफ़राद सअ़द रज़ि0 और ज़कवान रज़ि0 मुसलमान हुए।

11 नबवी में मदीने के छः[6] अफ़राद 12 नबवी में चौदह[14] अफ़राद मुसलमान हुए। इसी को बैते अ़क़बा-ए-ऊला कहते है। और फिर तेरह[13] नब्वी में तेहत्तर आदमियों ने बैत की जिस को बैतें अ़क़बा-ए-सानिया कहते है।

जब आप (स0) को इस बात का

पुरा अंदाजा होगया कि मक्के में रहते हुए इस्लाम में कामियाबी मुश्किल है तो आप स0 अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ शुरू रबीउ़ल अव्वल 14 नबवी में मक्का छोड़कर मदीना के लिए रवाना होगए।

मक्के से कुछ आगे चलकर सौर पहाड़ की एक ग़ार में तीन[3] दिन क़याम फ़रमाया। चार[4] रबीउ़ल अव्वल पीर के दिन यहां से रवाना होकर कुबा पहुंचे यहां आपने चौदह[14] दिन क़याम फ़रमाया और एक पहली मस्जिद तामीर की।

सत्ताईस[27] रबीउ़ल अव्वल को जुमे के दिन मदीने में हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रजि0 के मकान पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए (इसी साल से हिजरत का पहला साल शुरू होता है।

सन् 1 हिजरी में मस्जिद नबवी की बुनियाद रखी गयी और अज़ान की तालीम हुई।

सन् 2 हिजरी में रोज़े फ़र्ज़ हुए ज़कात फ़र्ज़ हुई, सद्का ए फित्र वाजिब हुआ। ईद, बक़रा ईद की नमाज़ का हुक्म हुआ। कुर्बानी का हुक्म हुआ। और सत्तरह[17] रमज़ान को जंगे बदर हुई जिसमें तीनसौतेरह[313] मुसलमान थे जिनके पास कुल दो[2] घोड़े सत्तर[70] ऊंट और चंद तलवारें थीं। और काफ़िर तक़रीबन एक हजार थे। उनके पास सौ[100] ऊंट सौ[100] घोड़े और हर एक के पास हथियार थे। इस के बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को बहुत बड़ी फ़तह दी। इस जंग में चौदह[14] मुसलमान शहीद हुए और सत्तर[70] काफ़िर

क़त्ल हुए और सत्तर70 ही क़ैद हुए।

सन् 3 हिजरी, में शराब हराम हुई। जंगे ठहुद हुई जिसके अन्दर शुरू में एक ग़ल्ती की वजह से शिकस्त हुई उस के फ़ौरन बाद फ़तह होगई।

सन् 4 हिजरी में बीरे माऊ़न का वाक़या पेश आया जिसमें सत्तर70 हुफ़्फ़ाजे क़ुरआन शहीद हुए।

सन् 5 हिजरी में पर्दे का हुक्म हुआ। जंगे ख़न्दक़ हुई और बनी मुस्तलक़ का वाक़ा हुआ।

सन् 6 हिजरी में चौदह सौ साहबा ए किराम के साथ सुलह हुदैबिया का वाक़ा हुआ। दुनिया के बादशाहों के पास इस्लाम की दावत के खुतूत भेजे।

सन् 7 हिजरी में ग़ज़ व-ए-ख़ैबर

हुआ। उमरा भी अदा किया गया जो हुदैबिया के मौके पर तै हुआ था।

सन् 8 हिजरी में जमादिय्युल अव्वल में जंगे मूता हुई। रमज़ानुल मुबारक में मक्का फ़तह हुआ। जिसमें दस हज़ार मुसलमान थे। आप स0 मक्का में पन्द्रह[15] रोज़ क़याम फरमाकर वापस तशरीफ ले आए और फौरन बाद शव्वाल ही को जंगे हुनैन हुई जिसमें चार[4] मुसलमान शहीद हुए। और इकहत्तर[71] काफ़िर क़त्ल हुए। उसके फौरन बाद जंग ताइफ़ का वाक़ा पेश आया।

सन् 9 हिजरी में माहे रजब में तबूक के लिए रवाना हुए। पन्द्रह[15] रोज़ वहां क़याम फरमाया और रमज़ान में मदीना मुनव्वरह वापस पहुंचे।

सन् 10 हिजरी में पच्चीस[25] ज़ीक़ादा हफ्ते के दिन हज के लिए मदीने से रवाना हुए और चार[4] ज़िलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा पहुंचे और तक़रीबन सवा लाख सहाबा ए किराम के साथ हज अदा किया।

सन् 11 हिज्री में अट्ठाइस[28] सफ़र मंगल के दिन आप स0 के सर में दर्द हुआ फिर तेज़ बुख़ार हुआ। चौदह[14] रोज़ आप स0 बीमार रहे और बारह[12] रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर चाश्त के वक्त तरेसठ[63] साल की उम्र पूरी फरमाकर आप स0 अल्लाह से जा मिले और दो दिन के बाद बुद्ध को रात को मदीने ही में दफ़न किये गये।

खुलफ़ा-ए-राशिदीन

हज़रत मुहम्मद स0 की वफ़ात के बाद

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि० मुसलमानों के ख़लीफ़ा बने। आप रज़ि० सवा दो साल ख़लीफ़ा रहे और तरेसठ[63] साल की उम्र पूरी फरमाकर बाईस[22] जमादियुस्सानी सन् 13 हिजरी में वफ़ात पाई।

इनके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ख़लीफ़ा बने आप रज़ि० साढ़े दस साल ख़लीफ़ा रहे और तरेसठ[63] साल की उम्र पूरी फरमाकर सत्ताईस[27] ज़िल हिज्जा सन् 23 हिज़री मुताबिक़ सन् 644 ई० में वफ़ात पाई।

इन के बाद हज़रत उ़समान ग़नी रज़ि० ख़लीफ़ा बने आप बारह[12] साल ख़लीफ़ा रहे और बयासी[82] साल की उम्र पूरी फरमाकर 18 जिलहिज्जा 35 हिजरी में वफ़ात पाई

इन के बाद हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज हहु खलीफ़ा बने । आप पौने पांच साल ख़लीफ़ा रहे और तरेसठ" साल की उम्र पूरी फरमाकर 17 रमज़ान सन् 40 हिजरी में वफ़ात पाई।

फ़र्ज़ किसको कहते हैं?

फ़र्ज़ वो काम है, जिसका इन्कार करने वाला काफ़िर होजाता है। और बग़ैर उज्र के छोड़ने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहि़क़ है।

फ़र्ज़ की दो क़िस्में है।

1. फ़र्ज़े एन 2. फ़र्ज़े किफ़ाया

1. फ़र्ज़े एन – उस फ़र्ज़ को कहते है जिसका अदा करना हर शख़्स पर ज़रूरी हो और बिला उज्र छोड़ने वाला

फ़ासिक़ और गुनहगार हो।

2. फ़र्ज़े किफ़ाया उस फ़र्ज को कहते है जो एक दो आदमियों के अदा करने से सबके ज़िम्मे से उतर जाए और अगर कोई भी अदा न करे तो सब के सब गुनहगार होंगे।

वाजिब किसको कहते हैं?

वाजिब वो काम है, जिसका इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता। हां बिला उज़्र छोड़ने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ होगा।

सुन्नत किसको कहते हैं?

सुन्नत उस काम को कहते है, जिस को रसूलुल्लाह स0 ने या सहाबा ए किराम" रज़ि0 ने किया हो या करने का हुक्म

फ़रमाया हो।

सुन्नत की दो क़िस्में हैं।–

1. सुन्नते मुअक्कदा 2. सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा

सुन्नते मुअक्कदा उस काम को कहते है, जिसे रसूले अकरम स0 ने हमेशा किया हो या फ़रमाया हो और हमेशा किया गया हो यानी बग़ैर उज़्र के कभी न छोड़ा हो। एसी सुन्नतों को बग़ैर उज़्र के छोड़ देना गुनाह हैं। और छोड़ने की आदत बना लेना सख़्त गुनाह है।

सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा उस काम को कहते है, जिसे हज़रत रसूलुल्लाह स0 ने अक्सर किया हो लेकिन कभी-2 बग़ैर उज़्र के छोड़ भी दिया हो। इन सुन्नतों के करने में मुस्तहब से ज़्यादह सवाब है। और छोड़ने में गुनाह नहीं।

मुस्तहब या नफ़िल

मुस्तहब या नफ़िल-उन कामों को कहते है। जिन को हज़रत मुहम्मद स० ने किया हो। लेकिन हमेशा और अक्सर नही बल्कि कभी-2 किया हो या उसकी फ़ज़ीलत शरीअ़त में साबित हो। इनके करने में स़वाब हैं। और न करने में अ़ज़ाब नही।

आदब वो काम है, जिसके करने में स़वाब है और उसके छोड़ने में न बुराई है न अ़ज़ाब (यह तअ़रीफ़ सुन्नते गै़र मुअक्कदा को शामिल है)।

हराम किस को कहते हैं

हराम वो काम है, जिस का करने वाला फासिक़ और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ है। और इसको जाइज़ कहने वाला काफ़िर हो जाता है।

मकरूहे तहरीमी

वो काम है, जिसको जाइज़ कहने वाला काफ़िर तो नही होता मगर गुनहगार है।

मकरूहे तनज़ीही

वो काम है जिसके छोड़ने में सवाब है करने में अज़ाब तो नही मगर एक क़िस्म की बुराई है।

हमारे नबी स0 का क्या नाम है?

आपका नाम मुहम्मद है और एक नाम आप का अहमद भी है। आपके नाम के आगे *"सललल्लाहु अलयहि वसल्लम"* लगाना चाहिए।

सहाबी किसको कहते हैं

वो शख़्स है जिसने हुजूर पाक स0 से

मुसलमान होने की हालत में मुलाकात की हो और इस्लाम ही पर उसका इन्तक़ाल हुआ हो।

ताबिई किस को कहते हैं?

वो शख्स जिसने मुसलमान होने की हालत में किसी सहाबी से मुलाकात की हो और इस्लाम ही पर उसका इन्तक़ाल हुआ हो।

मुनाफ़िक़ किस को कहते हैं?

वो शख्स जो जुबान से अपने आप को मुसलमान बताता हो और दिल से काफ़िर ही हो।

फ़ासिक़ किस को कहते हैं?

गुनहगार को बुरे काम करने वाले को।

ईमान किस को कहते हैं?

उन बातों को दिल से मानना जो हज़रत मुहम्मद स0 ने अल्लाह की तरफ़ से बताई हैं, और उन का ज़बान से इक़रार भी करना।

हदीस किस को कहते हैं?

हज़रत मुहम्मद स0 की बातों को हदीस़ कहते है। या इस तरह कहिए कि वो क़ौल (बात) और वो फ़अ़ल (काम) और तक़रीर (तक़रीर से मुराद किसी वाक़ा के सामने या इल्म में आने पर ख़ामोश रहना।) और ह़ाल (ह़ाल से मुराद जिसमानी और अख़्लाकी अहवाल है।) जिसकी निसबत आप स0 की तरफ़ हो नीज़ सहाबा ए किराम के क़ौल और फ़अ़ल और तक़रीर और ताबिओ़ के क़ौल और फ़अ़ल को भी हदीस कहते है।

(1- ईमान, 2- नमाज़, 3- इल्म और ज़िक्र, 4- इकरामे-मुस्लिम, 5-इख्लासे-नियत, 6- तफ़रीग़े-वक्त)

नहम्दुहू वनुसल्ली अ़ला 0 रसूलिहिल करीम

☆ अल्लाह का कितना बड़ा अहसान और करम है कि उसने हम सब को इसलाम जैसी बड़ी दौलत अता फरमाई अल्लाह के यहां हर एक मुसलमान और ईमान वाले की बहुत ज्यादा क़ीमत और इ़ज़्ज़त है कि अगर एक ईमान वाला भी इस दुनिया में बाकी रहेगा तो अल्लाह ताअ़ाला इस दुनिया के निज़ाम को चलाते रहेंगे। और सब से कम दर्जे के मुसलमान और ईमान वाले को भी

जो ज़र्रा बराबर भी इस दुनिया से ईमान को बचा कर लेजाएगा अल्लाह तआ़ला इस दुनिया से दस गुनी बड़ी जन्नत देंगे। इसलिए मुसलमान होना और ईमान का रखना बहुत ही कीमती चीज़ है। और ईमान यह है कि कलमा "*ला' इला ह इल लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह*" पढ़ा जाए और यह यकीन किया जाए कि जो भी कुछ होता है वो अल्लाह तआ़ला करते है, और अल्लाह तआ़ला के अलावा कोई कुछ नहीं कर सकता और हज़रत मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल है आप ने जो बातें बताई है वो बिल्कुल सच्ची है। और आप ही के तरीकों पर चलने मे काम्यिाबी है।

✩ और हजरत मुहम्मद स0 ने ईमान

के बाद जो सबसे अहम अ़मल बताया है वह नमाज़ है। हज़रत मुहम्मद स0 ने फ़रमाया है कि क़यामत के दिन इन्सान के अअ़माल में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा। अगर इस की नमाज़ सही निकली तो वह कामियाब और कामरान होगा। और अगर इसकी नमाज़ खराब निकली तो वो नाकाम और नामुराद होगा। इस लिए नमाज़ पाबन्दी से पढ़ी जाए। और इसके बारे में मसाइल मालूम किये जाएँ।

☆ और साथ ही इतना दीन का इल्म हर मुसलमान सीखे कि जिससे रोजाना के सामने आने वाले मसाइल मालूम होजाएं। हमारे नबी स0 ने इरशाद फ़रमाया है जब कोई इल्म हासिल करने के लिए किसी

रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देते हैं, इसलिए दीन का इल्म सीखा जाए और रोज़ाना वक़्त को तय करके फ़ज़ाइल की किताबें पढ़ी जाएं ताकि नेक काम करने का शौक पैदा होजाए।

☆ और अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, जो इन्सान अल्लाह का ज़िक्र करता है यानि अल्लाह को याद करता है उसके साथ अल्लाह रहते हैं, और जो इन्सान अल्लाह का ज़िक्र नही करता है उस के साथ शैतान रहता है। इसलिए जरूरी हैं। कि खूब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए। कम से कम तीन-तीन तस्बीहात घर का हर इन्सान पढ़े-

एक तस्बीह तीसरे कलमे की-

तीसरा कलमा :- सुब्हानल्लाहि वल-हम्दुलिल्लाहि वलाँ इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हव-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।

दूसरी तस्बीह दरूद शरीफ़ की :-

अल्लाहुम-म सल्ली अ़ला मुहम्मदिउ व-अ़लाँ आलि मुहम्मदिन कमा सल्लइ-त अ़लाँ इबराही-म व-अ़लाँ आलि इबराही-म इन-न-क हमीदुम्मजीद

तीसरी तस्बीह इस्तिग़फ़ार की :-

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी लाँ इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम मिन कुल्लि ज़मबिंव व-अतूबु इ-लइह।

☆ और हम सब के लिए यह भी जरूरी है कि हम हर मुसलमान की इज़्ज़त और इकराम करें और हर इन्सान का हक अदा करें अगर किसी का हक़ रह गया और मौत आगई तो उसके बदले आख़िरत में हम को अपनी नेकियां देनी पड़ेगी। हज़रत मुहम्मद स० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों पर रहम नहीं करता उस पर अल्लाह भी रहम नहीं करता।

☆ और जो भी नेक काम करना हो वह सिर्फ अल्लाह तआ़ला को राजी करने के लिए करना है। अगर किसी दिखावे के लिए कोई काम किया जायेगा तो सवाब नही मिलेगा और अमल बेकार होगा।

☆ और हम पूरे दीन पर चलने लगें

और तमाम इन्सान मुकम्मल दीन पर चलने लगें इसके लिए जरूरी है कि वक्त को फ़ारिग़ करके दीन की मेहनत में लगें। हज़रत मुहम्मद स0 ने क़सम खाकर यह इरशाद फ़माया कि तुम लोग अच्छायी का हुक्म करते रहो और बुराई से रोकते रहो वरना अल्लाह तआ़ला अपना अ़ज़ाब तुम पर डालेंगे। फिर तुम दुआ़ भी मांगोगे तो कुबूल न होगी। बुजुर्गों दोस्तो आज जो वेदीनी और बुराइयां फैल रही है वह सिर्फ इसलिए फैलरही है, कि हमने अच्छाई के फैलने और बुराई के ख़त्म होने की महनत छोड़ दी अल्लाह तआ़ला हम सब को इस दअ़वत वाली मेहनत में लगने की तौफीक़ अ़ता फरमायें (आमीन)

अब हिम्मत करके बतायें,
किस-किस का इरादा है?